शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (777-782) April - June 2019

समय के साथ साथ (लघुकथा.संग्रह) में उत्तरआधुनिकता

.डॉ0 मुख्तार अहमद गुलगुंदी
सहायक अध्यापक, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक कला महाविद्यालयए धारवाड
Email: mukhtarhindi786@gmail.com

सारांश

दरअसल उत्तर.आधुनिकता ने नवजागरण तथा इनलाइटमेंट के विरोध में सीधा संघर्ष किया। मानवमूल्य को हृदयंगम करने की अपेक्षा हमारा वैचारिक धरातल अत्यंत स्वार्थपूर्ण हो गया है कि हमने सामाजिक महत्व को भुला देने की स्थिति का निर्माण किया है। इसकी प्राप्ति यदि हम उत्तर आधुनिकता से करके देखते हैं तो इसने घोषणा की कि वह सांस्कृतिक, बहुलतावाद हर तरह के वैविध्यवाद का समर्थन करता है। जो अब तक दबाए गये तत्य जो हाशिये पर थेए उन्हें केन्द्र में लाने का प्रयास करता है। जिसमें नारी–विमर्ष, दलित विमर्ष, आदिम जातिए समलैंगिकता आदि पर नये सिरे से विचार करने की इच्छा रखता है। कम से कम आधुनिकता में वह तत्य हमारे ज्ञान के विकास में प्रगति के अतं.सूत्रों में सहायक थे। किंतु उत्तर आधुनिकता के सम्मुख उसका अस्तित्व एक प्रकार से कुंठित होने लगा।

उत्तर आधुनिकता की तीव्र गति ने पुरानी विचारधारों, मूल्यधारियों, जीवन–पद्धतियों को एक ऐसा धक्का दे दिया है जिससे एक दृढ़ संकल्पना वाली दीवार ढ़ह गई हो। भाषा–संस्कृति के क्षेत्र में हमने आजाद भारत में नव औपनिवेशिक गुलामी का पल्लू थाम लिया है जो सचमुच यह एक चिंतनीय स्थिति का आभास है।

परिवर्तन संसार का नियम है । जिस प्रकार संसार में परिवर्तन होता हैए उसी प्रकार परिवेश के अनुसार साहित्य में भी परिवर्तन दृष्टिगत होता है। हर भाषा के साहित्य में भी परिवर्तन होते आये है । हिन्दी साहित्य में भी परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन हो रहा है । आधुनिक काल में आतें.आतें हिन्दी भाषा के साहित्य में अनेक वादों ने पदार्पण किया । जिस तरह विविध विमर्शों ने हिन्दी साहित्य में स्थान ग्रहण किया है, उसी प्रकार उत्तर आधुनिकता का प्रभाव भी हिन्दी साहित्य पर पड रहा है। आज के साहित्य में बाजारवाद, भुमंडलीकण की चर्चा हो रही है । इस विश्वबाजार में मनुश्य विक्रय की वस्तु भी हैए विघेता भी है और धेता भी ।

उत्तर आधुनिकता के धरातल पर श्याम सखा श्याम कृत लघुकथा संग्रह समय के साथ. साथ का विश्लेषण किया गया है। उत्तर आधुनिकता का समूचे भारत पर भी प्रभाव तीव्रता से पड़ा है। घर–परिवारए समाज, देश आदि में व्याप्त है। हर हाल में जो धारणाएँ परंपरागत रूप से चलती आयी थीं उन्हें धराशाही करती उत्तर आधुनिकता की मानसिकता ने भारतीय समाज और परिवार को तहस नहस किया है। इसी की झाँकी हिन्दी के साहित्याकारों ने अपने साहित्य का

केंद्र माना है क्योंकि युग जिस तरफ रुख मोड लेता है उसी की प्रतिच्छाया साहित्य में झलकती है। उत्तर आधुनिकता के इस संदर्भ में भारतीय समाज की स्थिति बहुत ही शोचनीय है। इन्हीं मर्मस्पर्शी संवेदनाओं को उकेरने की कोशिश श्याम सखा श्याम ने अपने लघुकथा संग्रह समय के साथ–साथ में किया है।

मुख्य शब्दः *उत्तर आधुनिकता।*

प्रस्तावना

आधुनिकता का विलोम शब्द ही उत्तर–आधुनिकता है। आधुनिकता की कुछ प्रवृत्तियों का विपरीत रूप उत्तर आधुनिकता में देखा जाता है। किंतु इसकी चर्चा गंभीरता से करने का समय हमारे सम्मुख प्रस्तुत है। वैसे हम दो दशकों से इसकी चर्चा करते आ रहे हैं। इसके पूर्व गुजराती, बंगाली आदि में इस पर चर्चा खूब हो चुकी है। हिन्दी के मार्क्सवाद के चिंतक तो आरंभ में इस पर कितना हाय.तौबा किया। किंतु अब तो हालत यह है कि ल्योतरए देरिदा, मियोलफूको आदि के बिना अपनी बात पूरी होती ही नहीं।

दरअसल उत्तर–आधुनिकता ने नवजागरण तथा इनलाइटमेंट के विरोध में सीधा संघर्ष किया। मानवमूल्य को हृदयंगम करने की अपेक्षा हमारा वैचारिक धरातल अत्यंत स्वार्थपूर्ण हो गया है कि हमने सामाजिक महत्व को भुला देने की स्थिति का निर्माण किया है। इसकी प्राप्ति यदि हम उत्तर आधुनिकता से करके देखते हैं तो इसने घोषणा की कि वह सांस्कृतिक, बहुलतावाद हर तरह के वैविध्यवाद का समर्थन करता है। जो अब तक दबाए गये तत्य जो हाशिये पर थे, उन्हें केन्द्र में लाने का प्रयास करता है। जिसमें नारी–विमर्श, दलित विमर्श, आदिम जाति, समलैंगिकता आदि पर नये सिरे से विचार करने की इच्छा रखता है। कम से कम आधुनिकता में वह तत्य हमारे ज्ञान के विकास में प्रगति के अतं–सूत्रों में सहायक थे। किंतु उत्तर आधुनिकता के सम्मुख उसका अस्तित्व एक प्रकार से कुंठित होने लगा।

उत्तर आधुनिकता के कारण भूगोलिकरण और बाजारवाद के चलते मनुष्य अपने समाज तथा अस्तित्व को लेकर सजग तो हुआ। किंतु साहित्य समाज में होनेवाली विचारधारा का प्रभाव मानव जीवन के साथ हुए वैचारिक और संवेदनात्मक सोच और चिंतन के परिवर्तन भी जीवन के तत्य को ही बदलकर रख देता है। आज उत्तर आधुनिकतावाद आवास की भांति व्यापक धारणा हैए जिसे परिभाषित करना इतना आसान नहीं किंतु थोडा बहुत समाझा जा सकता है।

उत्तर आधुनिकतावाद हमारी स्मृति को मिटाकर हमें ग्लोबल बनाने का जाल रचता है। जिसके अतंर्गत ज्ञान, धन और हिंसा तीनों का मिला जुला रूप इक्कीसवीं सदी का दरवाजा खट खटाने में लगा रहा है। मानो एक नया विश्व साम्राज्यवाद सामने खडा प्रतीत हो रहा है।[1] दूसरी ओर तीसरी दुनिया के देश अपने को उपनिवेश बनाने की तैयारी में जुटे हुए हैं। जिसमें नए सिरे से पूँजीवादी शक्ति की क्षमता बढ़ने लगी। जिसको बाध्य होकर समझना होगा।

उत्तर आधुनिकता की सबसे बडी परिवर्तनशील प्रक्रिया में मीडिया को एक नई ताकत के रूप में स्वीकारा गया। जिसमें प्रचार–माध्यमों की चरम सीमा ने बाजारवाद को जन्म दिया।

अब इसी बाजावराद के नाम पर मानव को उगने का बीड़ा उठाया गया। अब वह शैतानी दिमाग अधिकाधिक लाभ कमाना चाहता है।

किंतु विश्व बाजार की तुलना में भारत जैसे देश के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ आ पड़ी हैं। उनमें समृद्ध पूँजीवादी देशों का खूला हमला एक जगह हो सकता है तोए दूसरी ओर अपने आदर्शों से भलि भांति परिचित यह देश जिसमें गांधीवाद के तत्य को तोड पानाए जिससे मानो स्वदेशी दर्शन को नष्ट करने का अभियान छिड चुका हो। फलस्वरूप क्या हमें बाध्य होकर पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति का वहन करना होगा, क्या हमारे पुराने आचार–विचार, संस्कृति के मूल्यों को त्यागना पड़ेगा? ये ही मौलिक प्रश्न हमारी मानसिकता को इस तरह झिंझोड देते रहें हैं। इसके अतिरिक्त भी परिवर्तन की दिशा में जिन उपकरणों की देन का श्रेय इसी उत्तर आधुनिकता को जाता है। जिनके बिना हमारा जीवन अधूरा समझा जायेगा।

उत्तर आधुनिकता की तीव्र गति ने पुरानी विचारधारों, मूल्यधारियों, जीवन–पद्धतियों को एक ऐसा धक्का दे दिया है जिससे एक दृढ़ संकल्पना वाली दीवार ढ़ह गई हो। भाषा–संस्कृति के क्षेत्र में हमने आजाद भारत में नव औपनिवेशिक गुलामी का पल्लू थाम लिया है जो सचमुच यह एक चिंतनीय स्थिति का आभास है।

परिवर्तन संसार का नियम है। जिस प्रकार संसार में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार परिवेश के अनुसार साहित्य में भी परिवर्तन दृष्टिगत होता है। हर भाषा के साहित्य में भी परिवर्तन होते आये है। हिन्दी साहित्य में भी परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन हो रहा है । आधुनिक काल में आतें–आतें हिन्दी भाषा के साहित्य में अनेक वादों ने पदार्पण किया । जिस तरह विविध विमर्शों ने हिन्दी साहित्य में स्थान ग्रहण किया है, उसी प्रकार उत्तर आधुनिकता का प्रभाव भी हिन्दी साहित्य पर पड रहा है । आज के साहित्य में बाजारवाद, भुमंडलीकण की चर्चा हो रही है । इस विश्वबाजार में मनुष्य विक्रय की वस्तु भी है, विघेता भी है और घेता भी । अब मनुष्य, मनुष्य नहीं रह गया हैय एक वस्तु बन गया है। आज जीवन मूल्य बदल गये है । रिश्तों में दरारें आ गयी हैं। इस तरह के अनेक बातों का चित्रण आज साहित्यकार अपने साहित्य के द्वारा कर रहे क्योंकि साहित्य का प्रभाव मनुष्य के मनो–मस्तिष्क पर पडता है और वह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है । अतः लघुकथा साहित्य भी इससे परे नहीं है । 'लघुकथा' में जीवन के किसी एक क्षण की अनुभूति होती है । निरूपमा सेवती जी के अनुसार–'खण्डित होते होते आज जीवन के इतने खण्ड हो चुके हैं कि किसी खण्ड अनुभूति को पूरी तेजी से व्यक्त करने के लिए लघुकथा ही अच्छा माध्यम है।'[2] 'याम सखा श्याम' कृत लघुकथा संग्रह समय के साथ साथ 2015 में प्रकाशित हुआ । डॉ0 श्याम सखा श्याम जी ने उपन्यास कहानी, कविता, गजल आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है । आप राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राज्यों की संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान से सम्मानित हैं । समय के साथ–साथ लघुकथा संग्रह में जीवन के छोट–छोटे क्षणों में उत्तर आधुनिकता का बोध हो जाता है । इसके अलावा इस संग्रह की लघुकथाएँ अनेक आयामों के धारातल को भी छूती हैं ।

आज तक समाज में बुजुर्गों को आदर का स्थान दिया जाता था, किन्तु आज उनकी

मौजुदगी घर में खल रही है । 'सस्ता सौदा' लघुकथा में सुमेर सिंह की पत्नी के मृत्यु के उपरान्त घर में उनकी कोई कीमत नहीं रहती है, वे आवारा कुत्ते की तरह गलियों में दिन काटते रहते हैं। 'विवशता' लघुकथा में भरी जवानी में विधवा हुई सुशीला ने अध्यापिका का कार्य करते हुए अपने एकलौते पुत्र मानवेन्द्र को एम0एस0सी0 करवा देती है । अब वह नौकरी में लग जाता है। वहीं पर सहकर्मी मंजुला से उसे प्यार हो जाता है । माँ न चाहते हुए भी उनकी शादी करवा देती है । अब बहु को घर में सास की मौजदगी खल ने लगती है। सास से पीछा छुडाने वह अपनी सहकर्मी से कोई उपाय पूछती है तब सहकर्मी उसे उपाय देते हुए कहती है। 'मंजुला ऐसी गलती मत कर बैठना । मैं तो पछता रही हूँ अपनी बेवकूफी पर। इतनी सस्ती व वफादार माई, वह भी बिना वेतनए खो बैठी मैं तो।'[3] लेखक इस उद्धरण के जरिए पाठकों के सामने आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता के बीच का फर्क रख दिया है। जहाँ पर आधुनिकता में बुजुर्गों को वृद्धाश्रम में भेज दिया जाता थाए आज उत्तर आधुनिकता में उनको घर पर ही रखकर उनसे काम करवा लेते हुए नौकर का दर्जा दिया जा रहा है । बिना वेतन की महरी समझा जाता है । यह बदलती हुई मानसिक स्थिति है, जिसमें उत्तर आधुनिकता दृष्टिगत होती है । 'रहस्य' लघुकथा में मास्टर रणबीर लेखक के पास अपने पिताजी को इलाज के लिए ले आता है । वे कम्पवात के पूराने मरीज थे तथा अब रक्तचाप की वजह से उन्हें अधरंग हो गया था, ऊपर से खून की कमी के कारण अनीमिया भी हो गया था । लेखक थोडे सशंकित होकर बोले कि दो बोतल खून की तुरंत जरूरी है, क्योंकि लेखक जानते थे कि मास्टर रणबीर इतना खर्चा नहीं करेगा । वह खूद के इलाज के लिए भी इतना खर्चा नहीं करता था । मगर रणबीर जाकर तुरंत दो बोतल खून लेकर आता है । लेखक उसकी पितृभक्ति देखकर आश्चर्यचकित हो गए, और रणबीर के स्वभाव में आए बदलाव की तारिफ की । जैसे ही उसके पिताजी ठीक हुए लेखक ने उसके पिताजी से कहा, बेटे ने बडी सेवा की तुम्हारी । तब एक मर्मस्पर्शी युक्त वाक्य रणबीर के पिता कहते है– 'अगर मैं मर जाता तो चार हजार रुपये महीना पेंशन बंद हो जाती है न । मैं दो टूक; रोटियों, का खर्चा ही तो हूँ।'[4] बदलते वक्त के साथ–साथ रिश्तों में भी दूरियाँ आ गयी है । इस वाक्य से ज्ञात होता है कि इन्सान से ज्यादा पैसों को महत्व दिया जा रहा है। यह बदलते मानवीय मूल्य है, जो इस लघुकथा के माध्यम से उजागर होता है।

'बदलता वक्त' लघुकथा में भी रिश्तों में आयी दूरियों का चित्रण किया गया है । धर्मसिंह लेखक के खास मरीजों में से एक है। उसकी तीन एकड जमींन थी । पिता के इलाज के लिए उसमें से एक एकड जमींन बेचकर इलाज करवाया था । यह बीस वर्ष पहले की बात थी । आज वह दिल की बीमारी से ग्रस्त है, तथा उने बायपास सर्जरी करनी पड़ेगी। लेखक उनसे अपने बेटों को जो शहर में रहते है उनको यहाँ बुलाने की या तो उनके पास जाने की सलाह देते हैं। उनके पत्नी का देहान्त हो चुका है। उनके सर्जरी के लिए लगभग ढाई–तीन लाख खर्चा आनेवाला था। अगले सप्ताह वे लेखक के पास चले आए और कहा कि मैं ने दो एकड जमीन बेच दी है। दस लाख रुपये मिले। छः लाख मासिक आय योजना में जमा कर दिया, शेष इलाज के लिए रख लिये है। आप मेरा ऑपरेशन करवा दें। जब लेखक ने बेटों की बात उठाई तब वे कहते हैं कि

दो साल पहले आए थे, उनको जमीन बेचकर शहर में प्लैट खरीदना है, किन्तु मैं ने मना कर दिये। वे तो प्रतिक्षा कर रहे है कि कब मैं मरूँ । वे आगे कहते हैं कि मैं वक्त से पहले उनके लिए नहीं मरूँगा। बदलते परिवेश के साथ–साथ रिश्तों में भी बदलाव आ रहा है। एक जमाना ऐसा था जब धर्मसिंह ने एक एकड जमीन बेचकर अपने पिताजी को बचाया था, आज उनके बेटे उनकी मृत्यु के इन्तजार में है, ताकि जमीन का पैसा मिले । आज सोच–विचार में भी परिवर्तन आया है, इसलिए धर्मसिंह ने अपनी जिंन्दगी खुशी से बिताने का फैसला करता है ।

'संस्कार' .1, 'संस्कार'. 2 'लघुकथाएँ' भी बिलकुल इसी धराताल को छूती हैं । जहाँ पर अपने भौतिक सुख से वंचित हो जाने के कारण माता पिता बच्चों को हॉस्टेल में रखते है। वहीं बच्चें बडे होने पर माता–पिता को वृद्धाश्रम में रखते है । माता–पिता ने बच्चों को हॉस्टेल में रखकर अपना कर्तव्य निभाया था । बच्चें उनको वृद्धाश्रम में रखकर अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। लेखक ने पाठकों के सामने यह सवाल खडा करने का प्रयास किया है कि जिस पर पाठक जरा सोचें । यह कैसा कर्तव्य है जो रिश्तों के बीच की ममता को समझता नहीं । आज कहीं ना कहीं रिश्तों में दूरियाँ आने का कारण यह भी हो सकता है कि उनमें सामंजस्य की कमी होती जा रही है ।

'मूँछें मुस्करा उठीं' एक ऐसी लघुकथा है, जिसमें लेखक गुणए रिश्तों से ज्यादा धन को महत्व देकर आज के यथार्थ स्थिति का परिचय देने का प्रयास किया है। हरेरामजी को अपने बेटे राजेश के लिए वधू की तलाश थी । आखिर दो लडकियाँ पसंद आ गयीं सुरेखा और मानसी। मानसी माता–पिता की एकलौती बेटी थी। राजेश की माँ चाहती है कि राजेश को साले–साली का सुख मिले। सुरेखा को एक भाई और एक बहन थी । जब फैसला राजेश पर सौंपा गया तब राजेश ने कहा 'साले साली को क्या चाटूँगा' मानसी के पिता की सारी ज्यायदाद तो मेरी होगी।'[5] यह उत्तर आधुनिकता है' जहाँ रिश्तों की जरुरत नहीं है' धन–दौलत के पीछे भागनेवाले लोग मिलेंगे। लघुकथा के अन्त में कहा गया है कि बेटे की समझदारी पर मास्टर हरेराम की मूँछें मुस्करा उठीं । 'आज का सच' लघुकथा का पात्र शान्ति बाई एक मोहल्ले में कई दशकों से महरी का काम करती थी । पति तथा बेटे निठल्ले एवं निकम्मे है । इसके कमाई पर जीवन बिताना चाहते हैं । उमर ढल गयी फिर भी बच्चों को माँ कि कमाई चाहिए । जब हुनरमन्द शान्ति बाई से पूछता है, बच्चे बडे हो गए है अब सब ठीक है ना । तब वह जवाब देती है 'बाबूजी, बच्चे छोटे थे तो रोटी ही माँगते थे । रोटी खाकर सो जाते थे । बडे होकर तो बोटी माँगने लगे है ।'[6] 'रूतबा' लघुकथा में अभिषेक और मृदुल दोनों बारहवीं कक्षा में पढते रहते हैं । अभिषेक के पिता डॉक्टर है । उनकी पत्नी मरे अभी अभी आठ महीने हुए हैं, वे दूसरी शादी करने वाले है। इस खबर से मृदुल को लगा किए अभिषेक परेशान होगा । वह अभिषेक को मिलने उसके घर आता है । अभिषेक और उसके पिता के बीच का संवाद सुनकर हैरान हो जाता है । जब मृदुल अभिषेक को खुशी का कारण पूछता है तो वह कहता है 'यार बात है ही खुशी की । पापा का विवाह मिस सक्सेना एडीशनल सेशन जज से हो रहा है ना । क्या धांसू पर्सनालिटी है मेरी होने वाली मम्मी की और ऊपर से उनका पद व रुतबा देखना शहर में अपनी तडी हो जाएगी।'[7] इसी तरह

'सुख सरबतिया का' लघुकथा के माध्यम से भौतिक सुख से भी ज्यादा अपनों का प्यार कितना मायना रखता है यह बताया गया है । आज के जमाने में मनुष्य मकान, कार, फ़्रिज, ए0सी0 आदि के पीछे भागता है किन्तु अपनों के प्यार से वंचित हो जाता है । आज रिश्तों की एहमियत कम होती जा रही है। भौतिक चीजों को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है ।

हमारे इर्द–गिर्द घटने वाली छोटी–छोटी घटनाओं को लेखक ने लघुकथाओं का विषय बनाया है । जीवन के इन सूक्ष्म क्षणों से ही मनुष्य का जीवन रूपायित होता है । इन छोट–छोटे क्षणों पर किस तरह उत्तर आधुनिकता का प्रभाव पड रहा है इसका चित्रण उपर्युक्त लघुकथाओं में किया गया है। श्याम सखा श्याम जी ने अत्यंत सशक्त भाषा का प्रयोग अपनी लघुकथाओं के लिए किया है। लेखक ने संवादों को बहुत ही कौशल्यता से रचा है। भाषा में सरलता, सहजता है जो पाठक आसानी से समझ सकते हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

1 *उत्तर आधुनिकतावाद की ओर.* कृष्णदत्र पालीवाल.पृ सं **13**
2 रमेश कुमार शर्मा. *हिन्दी लघु कथा रूस्वरूप एवं इतिहास* .पृ सं.**17**
3 डॉ0 श्याम सखा श्याम . *समय के साथ.साथ,* पृ सं .**07**
4 डॉ0 श्याम सखा श्याम . *समय के साथ.साथ,* पृ सं .**31**
5 डॉ0 श्याम सखा श्याम . *समय के साथ.साथ,* पृ सं.**10**
6 डॉ0 श्याम सखा श्याम . *समय के साथ.साथ,* पृ सं.**53**
7 डॉ0 श्याम सखा श्याम . *समय के साथ.साथ,* पृ सं .**74**